International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-01-2026; Accepted: 20-02-2026; Published: 07-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 215-216

21वीं शताब्दी और 'इन दिनों सतसई'

डॉ. ज्योति रानी
सहायक आचाय, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद मेमोरियल राजकीय महाविद्यालय, जम्मू, जम्मू और कश्मीर, भारत

सारांश
सतसई की परंपरा 'हाल' की 'गाथासप्तशती' से आरंभ हुई है। यह कृति प्राकृत भाषा में लिखी गई है। इसमें शृंगार रस की प्रधानता है साथ ही प्राकृतिक दृश्य तथा लोकजीवन का चित्रण करने वाली कथाएं हैं। 'सतसई' अर्थात सात सौ दोहों का संग्रह। यह मुक्तक काव्य की एक विशिष्ट विधा है। इसमें 700 या उससे अधिक छंद होते हैं। सतसई में प्रभाव सघनता और वचन वक्रता का सुंदर मिश्रण मिलता है। डॉ. अशोक कुमार द्वारा लिखित श्इन दिनों सतसई' आधुनिक परिवेश को अभिव्यक्त करने वाली रचना है। वर्तमान में सामाजिक यथार्थ संक्रमणशील है जो क्षण–क्षण बदल रहा है। इसी बदलते यथार्थ को अशोक कुमार ने श्इन दिनों सतसई' में अभिव्यक्त किया है। वर्तमान के अधिकांश महत्वपूर्ण मुद्दों को समेटते हुए प्रस्तुत संग्रह कवि की विषय विविधता का परिचय तो देता ही है, साथ ही प्रत्येक दोहा एक नया संदर्भ तथा ताजगी लिए हुए है। समकालीन दौर में दमित अस्मिताएं अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। इस संघर्ष की दशा और दिशा क्या है, इसे कवि खुली नज़रों से देख रहा है। इन अस्मिताओं की समस्याएं, जिजिविषा, परिवेश तथा इनमें उभरती चेतना को भी कवि ने चित्रित किया है।

मूल शब्दः सत्सई परंपरा, आधुनिक काव्यबोध, नैतिक मूल्य, मीडिया और समकालीन चुनौतियों

'सतसई' अर्थात सात सौ दोहों का संग्रह। यह मुक्तक काव्य की एक विशिष्ट विधा है। इसमें 700 या उससे अधिक छंद होते हैं। सतसई में प्रभाव सघनता और वचन वक्रता का सुंदर मिश्रण मिलता है। सतसई की परंपरा 'हाल' की 'गाथासप्तशती' से आरंभ हुई है। यह प्राकृत भाषा में लिखी गई है। इसमें शृंगार रस की प्रधानता है साथ ही प्राकृतिक दृश्य तथा लोकजीवन का चित्रण करने वाली कथाएं हैं। इसके पश्चात गोवर्धनचार्य द्वारा 'आर्यासप्तशती' की रचना की गई। यह रचना संस्कृत में लिखी गई है। इसके पश्चात अमरूक शतक में भी शृंगार रस के मनोहारी चित्रण मिलते हैं। इनके प्रभाव स्वरूप हिंदी में भी सतसई रचना का विकास हुआ, किंतु वह अपने निजी ढंग पर था। वह पूर्ववर्ती सतसई साहित्य से प्रभावित था किंतु उसका केवल अनुकरण नहीं था। कृपाराम द्वारा लिखित 'हिततरंगिणी' (1541 ई.) हिंदी सतसई परंपरा की पहली कृति मानी जाती है। श्बिहारी सतसई', हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध रचना है। यह कृ ति ब्रज भाषा में लिखी गई है। इसमें भक्ति, नीति और शृंगार के दोहे हैं। इसमें लोक और शास्त्र, प्रेम और सौंदर्य, भक्ति और नीति का विरल संयोग है। यद्यपि हिंदी में बिहारी के पहले भी सतसई परंपरा रही है, किंतु बिहारी की सतसई की प्रसिद्धि ने सतसई रचना के लिए कई लेखकों को प्रोत्साहित किया। अतः जो सतसई लिखी गयी हैं उनमें श्रृंगार, प्रेम, भक्ति, नीति, पर्यावरण तथा व्यवहार ज्ञान महत्वपूर्ण विषय रहें हैं। इसके साथ 'रहीम सतसई' मिलती है। इसमें भक्ति, प्रेम, नैतिकता और सामाजिक मुद्दों पर विचार प्रकट किए हैं। इसमें मनुष्य जीवन के वैविध्य को बेहतर ढंग से समेटा गया है। इसके पश्चात 'वृंद सतसई' है। जिसमें नीति, अनुभव, मानवीय मूल्यों का अधिकांश चित्रण हुआ है। यह एक शिक्षाप्रद रचना है। इसके पश्चात हिंदी में सतसई की एक लंबी परंपरा मिलती है। तुलसी सतसई, रसनिधि सतसई, मतिराम सतसई, भूपति सतसई, विक्रम सतसई, वीर सतसई, बृजविलास सतसई आदि। आधुनिक काल में भी यह परंपरा विकसित हुई है। इसमें वीर सतसई (वियोगी हरि), स्वदेश सतसई (महेशचन्द्र), करुण सतसई (रामेश्वर करुण), हरिऔध सतसई (1940, हरिऔध), ब्रज सतसई (1937, रामचरित उपाध्याय), अमृत सतसई (अमृतलाल चतुर्वेदी) आदि महत्वपूर्ण हैं ।

डॉ. अशोक कुमार द्वारा लिखित 'इन दिनों सतसई' आधुनिक परिवेश को अभिव्यक्त करने वाली रचना है। वर्तमान में सामाजिक यथार्थ संक्रमणशील है जो क्षण–क्षण बदल रहा है। इसी बदलते यथार्थ को अशोक कुमार ने 'इन दिनों सतसई' में अभिव्यक्त किया है। वर्तमान के अधिकांश महत्वपूर्ण मुद्दों को समेटते हुए प्रस्तुत संग्रह कवि की विषय विविधता का परिचय तो देता ही है, साथ ही प्रत्येक दोहा एक नया संदर्भ तथा ताजगी लिए हुए है। समकालीन दौर में दमित अस्मिताएं अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। इस संघर्ष की दशा और दिशा क्या है, इसे कवि खुली नज़रों से देख रहा है। इन अस्मिताओं की समस्याएं, जिजिविषा, परिवेश तथा इनमें उभरती चेतना को भी कवि ने चित्रित किया है।

"समय मुश्किल पर दम है, कौन हरेगा प्राण
हक अपना है मांगते, नहीं मांगते दान।।"[1]

आधुनिक काव्य बोध का प्रभाव इस संग्रह पर स्पष्ट लक्षित होता है। आज का समय बाज़ारवाद और भूमंडलीकरण का है। जिसके कारण सामाजिक घटकों में कई परिवर्तन आए हैं। यह परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूप में हैं। मानव में नैतिकता, आदर्श और स्वस्थ परम्पराओं का ह्रास हो रहा है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन हो रहा है। आधुनिकता के नाम पर आज जो नग्नता परोसी जा रही है, कवि ने कड़े शब्दों में उसकी निंदा की है।

"फोटो महिला की छपी, दिखती नंग मनंग
इश्तिहार से दिख गई, संस्कृति उल्टे रंग।"[2]

"अश्लील रहे वीडियो, पकड़ लिए थी रोक
फोटो फिर अखबार में, बिके सड़क पर चौक।"[3]

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। वर्तमान में मीडिया की उपयोगिता, महत्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। जहां जनता को मीडिया ने निर्भीकतापूर्वक जागरूक करने, भ्रष्टाचार को उजागर करने ,सत्ता पर तार्किक नियंत्रण एवं

जनहित कार्यों की अभिवृद्धि में योगदान दिया है। वहीं लालच, भय, द्वेष, स्पर्धा, दुर्भावना एवं राजनैतिक कुचक्र के जाल में फंसकर अपनी भूमिका को कलंकित भी किया है।

"नायक की न बात करे, निंदा चर्चा जोर
झूठ परोसे मीडिया, खलनायक का दौर।"[4]

अधिकांश मीडिया घरानों पर पूंजीपतियों और उद्योगपतियों का कब्ज़ा है इसलिए उनसे निष्पक्षता की माँग करना मूर्खता है। वे अधिकतर सत्ता के नियंत्रण में काम करते दिखाई दे रहे हैं।
देश की राजनीतिक स्थिति को दिखाते हुए कवि ने नेताओं की हृदयहीनता और वादाखिलाफी को अधिकांशत: चित्रित किया है। साथ ही संसद में कई दागी नेताओं की ओर भी संकेत किया है। वर्तमान में अंग्रेजी माध्यम स्कूलों का आकर्षण निरंतर बढ़ रहा है। इससे गरीब परिवारों में हीनता बोध एवं हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रति उपेक्षा भाव पैदा हो रहा है। निजी शिक्षा केंद्रों तथा प्रशिक्षण सेंटरों की बढ़ती तादाद ने गुरु–शिष्य परंपरा तथा शिक्षा के महत्व को बदल दिया है। कई दोहों में शिक्षा के व्यवसायीकरण पर विचार किया गया है।

"स्कूल अमीरों के बड़े, चकाचौंध के न्यास
बच्चा बहुत गरीब का, जाए कैसे पास।"[5]

अधिकांश दोहों में स्थानीयता का पुट मिलता है। कवि का संबंध जम्मू से है तो जम्मू की नदियों, पहाड़ों तथा कई स्थलों का वर्णन दोहों में मिलता है। तवी, चंद्रभागा, रियासी, अखनूर, रामनगर, बाग़–ए–बाहु ,जम्मू तथा कश्मीर प्रांत आदि का जिक्र आता है जो कवि का अपने परिवेश से संबंध को दर्शाता है। इन दोहों से जम्मू की संस्कृति को जानन–समझने का अवसर मिलता है।

"तवी नदी से दिख रहा, दुर्ग बाहु का भाल
बदली जल अभिषेक है, सूरज टीका लाल"[6]

वस्तुत: यह दोहे क्षेत्र की सुंदरता, विविधता, लोगों की मान्यताओं और उनकी रुचि को दिखाते हैं ।

जनवरी 2024 में अयोध्या में राम मंदिर की स्थापना हुई। इसे लेकर पूरे भारतवर्ष में उत्साह देखा गया। पुस्तक में बहुत से दोहे राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से संबंधित हैं। इनमें राम भक्तों का उत्साह, अयोध्या नगरी में उजास और साथ ही इसके विरोध में कई लोगों की मानसिकता का चित्रण भी मिलता है। इनमें सरकार तथा न्यायालय पर सवाल उठाने वालों को भी जवाब दिया गया है ।

"जन्म जहाँ था राम का, वहीं विराजे राम
उलझन में अब जो पड़े, रहे राम के वाम"[7]

आज युवाओं में विदेशों के प्रति आकर्षण निरंतर बढ़ रहा है। भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों से पढ़कर विदेशों में अपनी सेवाएं देने वाले युवाओं पर भी व्यंग्य किए गए हैं।
पुस्तक में कुछ दोहे ऐसे हैं जिन्हें पढ़कर ज्ञात होता है कि कवि की दृष्टि अस्पष्ट है। आरक्षण, स्त्री की स्थिति तथा समाज में अन्य सम्प्रदायों के प्रति पारम्परिक सोच को नए दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है । जिन्हें निम्न दोहे स्पष्ट करते हैं:–

"मस्जिद बैठा मौलवी, आतंक समझाए
हूर बहत्तर थाम लो, ये कहे फुसलाए ।"[8]

"अन्याय का न हो सके, आरक्षण उपचार
नष्ट वर्ग हो चेतना, पड़े जाति पर मार"[9]

इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण, नशाखोरी, अस्पताल, न्यायालय तथा सरकारी दफ्तरों में रिश्वतखोरी, भाई–भतीजावाद, परिवार में वृद्धों की उपेक्षा, साइबर फ्रॉड, गाँव की उपेक्षा, भारत–पाकिस्तान युद्ध का चित्रण, विवाह पर फिजूलखर्ची, घरेलू हिंसा, फैशनपरस्ती, आदि कई महत्वपूर्ण विषयों को पुस्तक में समेटा गया है। साथ ही कई नीतिपरक दोहे भी पुस्तक में संकलित हैं।
किसी भी रचना में जितना भाव महत्वपूर्ण होता है उतना ही शिल्प भी। दोनों ही कृति में सौंदर्य की सृष्टि करते हैं। सम्प्रेषणीयता की दृष्टि से पुस्तक सफल है। भावों के अनुरूप तत्सम, देशज, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है, ध्यान देने योग्य है कि यह शब्द वे शब्द हैं जो जनता में रच बस गए हैं। कुछ शब्द अखरते हैं लेकिन वह बहुत कम है। कई शब्द तथा वाक्य ऐसे हैं जो साहित्यिक नहीं लगते, जैसे 'पूंछ कोर्ट ने काट दी, रगड़ दिया अभिमान', लुच्ची, लौंडे, हिजड़ा आदि ऐसे शब्द हैं जो रस में बाधक बनते हैं। अधिकांश स्थानों पर प्रतीक और बिम्ब कवि के शिल्प सौंदर्य को महत्वपूर्ण बनाते हैं, कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है।

"दिन खरगोश उछल गया, रात कालिमा गाय
हिरणी जैसी सांझ है, नद फाँदती जाए"[10]

"संध्या चिड़िया उड़ चली, दिन का है अवसान
जोगी कपड़े फेंक कर, हो ले अन्तर्ध्यान"[11]

अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकताहै की विवेच्य कृति 'इन दिनों सतसई' अपने समकालीन परिवेश को चित्रित करने वाली महत्वपूर्ण रचना है। वर्तमान दौर के लगभग प्रेत्यक मुद्दे पर दोहे पुस्तक में संकलित हैं।

संदर्भ

1. अशोक कुमार, इन दिनों सतसई, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन ,2025 पृष्ठ. 7
2. वही, पृष्ठ 92
3. वही, पृष्ठ 92
4. वही, पृष्ठ 14
5. वही, पृष्ठ 24
6. वही, पृष्ठ. 38
7. वही, पृष्ठ. 73
8. वही, पृष्ठ 58
9. वही पृष्ठ. 84
10. वही, पृष्ठ 21
11. वही, पृष्ठ 18